Class - IV
Subject - HINDI
पाठ – 2 महायज्ञ का पुरस्कार

1. शब्दार्थ :–

विनम्र	–	विनीत और सुशील
उदार	–	दयालु
धर्म–परायण	–	धर्म में आस्था रखने वाला
अकस्मात्	–	अचानक
नौबत	–	स्थिति
प्रथा	–	परंपरा
प्रचलित	–	जो चल चुका हो
क्रय	–	खरीद
विक्रय	–	बेचना
तंगी	–	परेशानी
जमी है	–	टिकी है
निःस्वार्थ	–	बिना लोभ के
देह	–	शरीर, तन
वेदना	–	कष्ट
विपत्ति	–	संकट
फ़र्श	–	ज़मीन
विलीन	–	गायब होना
मानवोचित	–	मनुष्य हेतु उचित

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

क. सेठ का व्यवहार कैसा था?

उत्तर सेठ का व्यवहार दयालु और विनम्र था।

ख. सेठ ने दान में धन किस–किसको दिया?

उत्तर सेठ ने दान में धन दीन–दुखियों को दिया।

3. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. सेठ जी अपना यज्ञ बेचने कहाँ गए?

उत्तर सेठ जी अपना यज्ञ बेचने कुंदनपुर नामक नगर के धन्ना सेठ के पास गए।

ख. सेठ जी अपना यज्ञ बेचने के लिए क्यों तैयार हो गए?

उत्तर अपनी तंगी का विचार कर सेठ जी यज्ञ बेचने के लिए तैयार हो गए।

ग. सेठ ने चारों रोटियाँ कैसे खिला दीं और क्यों?

उत्तर सेठ ने चारों रोटियाँ भूखे कुत्ते को खिला दीं क्योंकि कुत्ता कई दिनों से भूखा तथा कमजोर था। सिर्फ एक या दो रोटी से उसकी भूख नहीं मिटती।

घ. सेठानी ने महायज्ञ के बारे में क्या कहा?

उत्तर सेठानी ने महायज्ञ के बारे में कहा कि "निःस्वार्थ भाव से किया गया कर्म ही सच्चा यज्ञ है; महायज्ञ है।"

ङ महायज्ञ का पुरस्कार सेठ जी को किस रूप में मिला?

उत्तर महायज्ञ का पुरस्कार सेठ जी को खजाने के रूप में मिला।